



आशीर्हण

वर्ष : 2015 - 2016

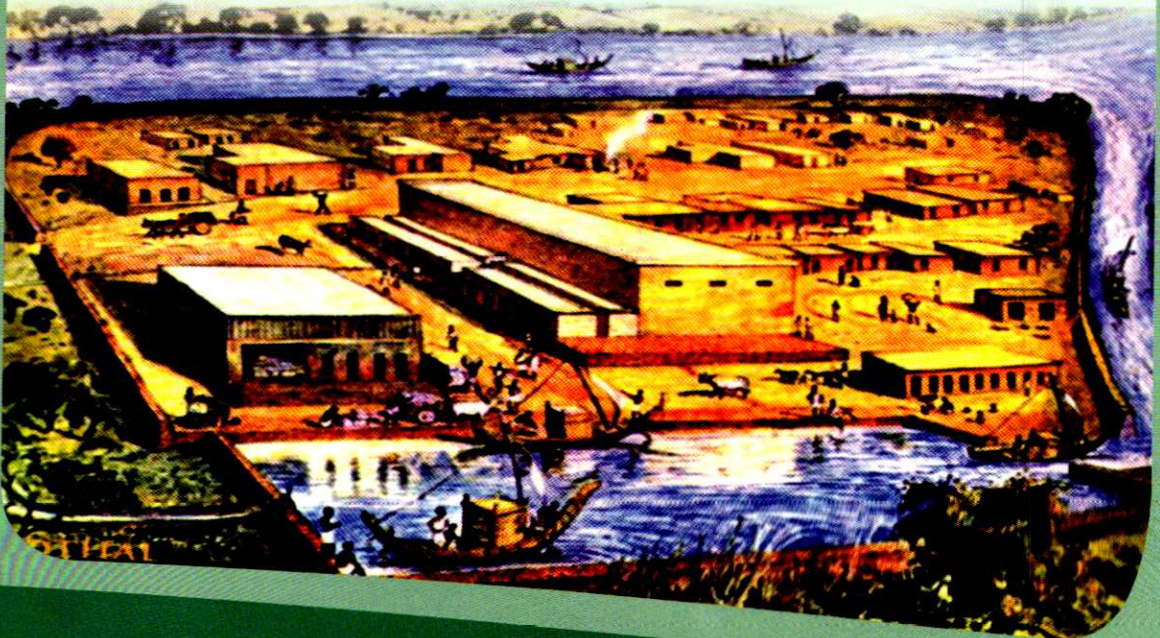


लोथल

लोथल प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों में से एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर है। लगभग 2400 ईसापूर्व पुराना यह शहर भारत के राज्य गुजरात के भाल क्षेत्र में स्थित है और इसकी खोज सन 1954 में हुई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस शहर की खुदाई 13 फरवरी 1955 से लेकर 19 मई 1956 के मध्य की थी। लोथल, अहमदाबाद जिले के ढोलका तालुका के गाँव सरागवाला के निकट स्थित है। अहमदाबाद-भावनगर रेलवे लाईन के स्टेशन लोथल भुखरी से यह दक्षिण पूर्व दिशा में 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लोथल अहमदाबाद, राजकोट, भावनगर और ढोलका शहरों से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा है जिनमें से सबसे करीबी शहर ढोलका और बगोदरा हैं।

लोथल गोदी जो कि विश्व की प्राचीनतम ज्ञात गोदी है, सिंध में स्थित हड़प्पा के शहरों और सौराष्ट्र प्रायद्वीप के बीच बहने वाली साबरमती नदी की प्राचीन धारा के द्वारा शहर से जुड़ी थी, जो इन स्थानों के मध्य एक व्यापार मार्ग था। उस समय इसके आसपास का कच्छ का मरुस्थल, अरब सागर का एक हिस्सा था। प्राचीन समय में यह एक महत्वपूर्ण और संपन्न व्यापार केंद्र था जहाँ से मोती, जवाहरात और कीमती गहने पश्चिम एशिया और अफ्रीका के सुदूर कोनों तक भेजे जाते थे। मनकों को बनाने की तकनीक और उपकरणों का समुचित विकास हो चुका था और यहाँ का धातु विज्ञान पिछले 4000 साल से भी अधिक समय से कसौटी पर खरा उतरा था।

1961 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने खुदाई का कार्य फिर से शुरू किया और टीले के पूर्वी और पश्चिमी पक्षों की खुदाई के दौरान उन वाहिकाओं और नालों को खोद निकाला जो नदी के द्वारा गोदी से जुड़े थे। प्रमुख खोचों में एक टीला, एक नगर, एक बाज़ार स्थल और एक गोदी शामिल है। उत्खनन स्थल के पास ही एक पुरातत्व संग्रहालय स्थित है जिसमें सिंधु घाटी से प्राप्त वस्तुएं प्रदर्शित की गयी हैं।



आरोहण

वर्ष : 2015-2016

संयुक्त प्रकाशन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)

गुजरात, अहमदाबाद

और

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
अहमदाबाद

आरोहण

प्रकाशक : कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद.
और
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद
की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुद्रक : मंजु ट्रेडर्स
अहमदाबाद
मो. 9825575447

इस अंक में प्रस्तुत रचनाकारों के विचार स्वतंत्र हैं और उनकी रचनाओं की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जिम्मेदारी स्वयं रचनाकारों की है। पत्रिका परिवार का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी वाद-विवाद का न्यायिक क्षेत्र अहमदाबाद, गुजरात होगा।

आरोहण

‘पत्रिका - परिवार’

वर्ष : 2015-2016

संरक्षक	: श्री यशवंत ठाकरे	प्रधान महालेखाकार कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद
	: श्री डी.पी. यादव	प्रधान निदेशक कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद
सम्पादक मण्डल	: श्री संदीप बाजपेयी	लेखापरीक्षा अधिकारी
	श्री अनिल कुमार बेनीवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	श्रीमती श्वेता शुक्ला	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	श्री अजय शुक्ल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	श्री अरुण जांगिड़	हिन्दी अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
गुजरात, अहमदाबाद.

संदेश

हिन्दी भाषा की सार्थकता के लिए प्रयासरत संयुक्त पत्रिका आरोहण के नवीनतम अंक, वर्ष 2015-16 के सफल प्रकाशन पर आपको हार्दिक बधाई ।

किसी भी देश में लोकतन्त्र की सफलता के लिए उत्तरदायी महत्वपूर्ण कारणों में से एक है - उस राष्ट्र की राजकीय भाषा । भारतीय संघ के राज-काज की भाषा हिन्दी, जिसकी लिपि देवनागरी है, है । अतः यह हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है कि हम अपना कार्यालयी कार्य अधिकाधिक राजभाषा हिन्दी में ही करें ।

‘आरोहण’ पत्रिका के द्वारा कार्यालय सदस्यों के विचारों, अनुभवों और कल्पनाओं को मूर्तरूप देकर हिन्दी के प्रति हमारी मौलिकता व रचनात्मकता को बढ़ावा दिया जाता है । पत्रिका प्रकाशन के लिए संपादन मंडल व इसके सदस्यों, अन्य सहयोगी सदस्यों, सभी रचनाकारों व हिन्दी अनुभाग को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हस्ता /-

(यशवंत ठाकरे)

प्र.म.ले.(आ.एवं रा.क्षे.ले.प.) गुजरात एवं संरक्षक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद

संदेश

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.ले.प.) गुजरात, अहमदाबाद एवं कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद की संयुक्त हिन्दी पत्रिका 'आरोहण' के प्रकाशन का यह निरन्तर प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

भारतीय संस्कृति की ध्वज वाहिका हिन्दी आज ग्लोबल भाषा बनने के पथ पर अग्रसर है। विविधताओं से परिपूर्ण हमारे देश में विभिन्न भाषा-भाषियों के मध्य पारस्परिक विचार विनिमय का सबसे प्रबल साधन बनकर हिन्दी ने समूचे राष्ट्र को भावात्मक एकता के सूत्र में बांध रखा है। हिन्दी हमारी पहचान है।

यह हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि कार्यालयीन कामकाज में हम हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें एवं राजभाषा के संवर्धन में अपना सार्थक योगदान दें। 'आरोहण' के इस नवीनतम अंक के माध्यम से कार्यालय के सदस्यों को न सिर्फ साहित्य सृजन के लिये प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि हिन्दी के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान देने का सुअवसर भी प्राप्त होगा।

पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, संपादक मण्डल तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी सदस्यों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका के अविरल प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हस्ता /-

(डी. पी. यादव)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) एवं संरक्षक

आरोहण का वर्ष 2015-16 का यह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हम अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। आशा है इस अंक में प्रकाशित लेख, कवितायें, संस्मरण इत्यादि आपको रोचक लगेंगे तथा यह हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

वैसे तो गुजरात एक गैर हिन्दी भाषी राज्य है इसके बावजूद भी हिन्दी पखवाड़ा तथा आरोहण पत्रिका के प्रति कार्यालय के कर्मचारियों का उत्साह सराहनीय है। इस कार्यालय में हिन्दी के अधिक प्रयोग में तथा आरोहण पत्रिका में प्रकाशनीय सामग्री का योगदान करने में हिन्दी भाषी प्रदेशों से इस कार्यालय में नियुक्त हुए कर्मचारियों के साथ स्थानीय कर्मचारियों का बराबर का योगदान है। यह आशा है कि भविष्य में अधिकाधिक कर्मचारी पत्रिका में प्रकाशनीय अधिकाधिक रचनाओं के साथ आगे आयेंगे।

पत्रिका में रचनाकारों को उनकी रचनाओं के लिए, हिन्दी अनुभाग के सदस्यों को इस पत्रिका के प्रकाशन के सन्दर्भ में उनके सतत परिश्रम के लिए तथा कार्यालय के सदस्यों को उनके सहयोग के लिए बहुत-बहुत आभार।

आपसे अनुरोध है कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ तथा समग्र पत्रिका के संयोजन इत्यादि के सम्बन्ध में अपने मूल्यवान सुझाव हमें अवश्य भेजें ताकि आगामी वर्षों में हम पत्रिका में उत्तरोत्तर सुधार करके आगामी वर्षों में पाठकों के लिए अधिक रोचक पठन सामग्री प्रस्तुत कर सकें तथा पत्रिका को हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहभागी बना सकें।

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना का नाम	रचयिता का नाम	पृष्ठ सं.
1.	आपके पत्र		8
2.	वैष्णोदेवी की यात्रा	हिमांशु वर्मा	9
3.	माता-पिता का साथ: एक वटवृक्ष की छाँव	अरुण जांगिड़	13
4.	मीराबाई: जीवन परिचय	हरि गोविन्द	15
5.	गीतिका	रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र	16
6.	मंजिल खड़ी उजालों में	मल्लिका मुखर्जी	17
7.	बटता हिंदुस्तान	प्रदीप मधेशिया	18
8.	योग: सम्पूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी	अरुण जांगिड़	19
9.	जिम्मेदार नागरिक के रूप में छात्र की भूमिका	सिमरन राठौर	21
10.	सुखी दाम्पत्य जीवन	रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र	22
11.	प्यारी सी वाट्सअप कविता	विद्या अय्यर	24
12.	'समन्वित स्वर' : एक अवलोकन	मल्लिका मुखर्जी	25
13.	भारत महान	प्रदीप मधेशिया	29
14.	जीवन में परिश्रम का महत्व	छत्रपाल सिंह राठौर	30
15.	सपने देखिये, साकार भी करिये	रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र	31
16.	ईश्वर	मल्लिका मुखर्जी	33
17.	रचनाएँ	रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र	34
18.	भूख की दुनिया में ईमान बरकरार है।	बी.के. परमार	35
19.	हिन्दी पखवाड़ा 2015		37
20.	कार्यालयीन गतिविधियाँ		38
21.	वर्ष 2015-16 में कार्यालय में आयोजित प्रवृत्तियों का ब्यौरा।		39

1. आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका आरोहण का नवीनतम अंक पत्र संख्या हिंदी अनुभाग - पत्रिका आरोहण - फा-210 जा.पा.13 दिनांक 28-04-16 प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक है। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका की निरन्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

**वरिष्ठ लेखाधिकारी — हिन्दी, कार्यालय
महालेखाकार (लेखा एवं हक)
उत्तराखण्ड, देहरादून**

2. आपके द्वारा भेजी गई हिन्दी वार्षिक पत्रिका आरोहण 2014-2015 के नवीनतम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएं अत्यंत

ज्ञानवर्धक, नीतिपरक एवं रोचक है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली है। श्री हरि गोविन्द जी द्वारा लिखित लेख नारी जीवन में शिक्षा का महत्व, श्री हंसराज जी द्वारा लिखित लेख आरक्षण वरदान या अभिशाप, श्री हंसराज जी द्वारा लिखित कविता माँ, श्री छात्रपाल सिंह राठौर द्वारा लिखित लेख युवा पीढ़ी के लिए अनुशासन का महत्व, श्री विद्या एय्यर द्वारा लिखित कविता कैसे कह दूँ उपवन तेरा मधुमास बना रह पायेगा, श्री ए.एम. दवे द्वारा लिखित लेख मन पर नियंत्रण आदि सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रासंगिक है।

पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों को सफल संपादन एवं लगातार प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना।

**लेखापरीक्षा अधिकारी — हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार आर्थिक एवं
राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा पश्चिम बंगाल**

वैष्णोदेवी की यात्रा



हिमांशु वर्मा

मैं आप सभी लोगों का धन्यवाद करता हूँ कि आप सभी ने मेरे लेख 'कूल्लू-मनाली की यादें' को पसंद किया और सराहा। अब मैं आपके सामने मां वैष्णोदेवी यात्रा का अनुभव बांटना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी को यह लेख भी पसंद आयेगा।

वैष्णोदेवी मंदिर, शक्ति को समर्पित एक पवित्र मंदिर है। जो भारत के जम्मू और कश्मीर में वैष्णोदेवी की पहाड़ी पर स्थित है। हिंदू धर्म में वैष्णोदेवी जो माता रानी और वैष्णवी के रूप में भी जानी जाती है, देवी मां का अवतार हैं।

यह मंदिर, जम्मू और कश्मीर राज्य के जम्मू जिले में कटरा नगर के समीप अवस्थित है। यह उत्तरी भारत में सबसे पूजनीय पवित्र स्थलों में से एक है। यह मंदिर 5200 फीट की ऊंचाई और कटरा से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हर साल लाखों तीर्थयात्री मंदिर का दर्शन करते हैं। इस मंदिर की देख-रेख श्री माता वैष्णोदेवी तीर्थ मंडल द्वारा की जाती है। वर्षों से भारत के सभी छोटे-बड़े शहरों से जम्मू और उधमपुर तक रेल द्वारा पहुंच

कर बस द्वारा कटरा पहुंचा जाता था। अब जाने वाले यात्रियों की संख्या देखते हुए और तीर्थ-यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए अब कटरा तक एक रेल संपर्क बनाया गया है।

कई वर्षों से मां वैष्णोदेवी के दर्शन करने की ईच्छा थी किन्तु किसी न किसी कारणवश यह इच्छा पूरी नहीं हुई। कहते हैं कि जब तक दरबार में मां का बुलावा नहीं आता तब तक कितनी भी कोशिश करो दर्शन नहीं हो पायेंगे और जब मां का बुलावा आया तो कोई भी नहीं रोक पायेगा। मैंने अहमदाबाद से जम्मू तक की अप्रैल - 2015 की टिकिट आरक्षित कर ली थी किन्तु अप्रैल - 2015 में जम्मू-कश्मीर में आयी बाढ़ के कारण यात्रा रद्द करनी पड़ी फिर जैसे तैसे करके अहमदाबाद से दिल्ली और दिल्ली से बस द्वारा 30 अप्रैल 2015 की टिकिट बुक करवायी लेकिन 25 अप्रैल 2015 को नेपाल में आये भूकम्प के कारण हमने जाना मुनासिब नहीं समझा, मान लिया कि अभी मां के दरबार से बुलावा नहीं आया है और बुलावे का इन्तजार करने लगे। कुछ दिनों के बाद अचानक ही हमारे भाईयों ने जून में वैष्णोदेवी

का प्रोग्राम बनाया और मुझे फोन करके आने के लिये आमंत्रण दिया। इस बार मैंने भी मन ही मन ठान लिया कि अब तो दर्शन करके ही वापिस आऊँगा। मैं अपनी पत्नी और बेटे को लेकर दिल्ली तक रेल द्वारा पहुँच गया। उस दिन दिल्ली का मौसम भी गड़बड़ था, मेरे मन में कौतुहल सा मचा था कि इस बार भी कहीं गड़बड़ न हो जाये। हम लगभग 10 लोग थे और सभी लोगों के रात 9 बजे की बस से टिकट बुक करवा लिये थे। हम सब ने बस में अपना स्थान लिया और मां का जयकारा लगाते हुए यात्रा प्रारंभ की। जैसे ही बस स्टार्ट हुई कि अचानक मूसलधार बारिश शुरू हो गयी और लगभग 2 घंटे के बाद हम काफी ट्रैफिक को काटते हुए दिल्ली से बाहर निकले, अभी बारिश हो ही रही थी। दिल्ली से आगे कुछ घंटों के सफर के बाद हम हरियाणा होते हुए आगे बढ़ रहे थे तभी बस अचानक रुकी और मैंने देखा कि सड़क पर लगभग 3 फीट पानी भरा है। सभी यात्रियों ने आपस में सलाह करके बस को धीरे धीरे आगे बढ़ाने का फैसला लिया और फिर सभी ने मां का जयकारा लगाया और धीरे धीरे लगभग 1 किलोमीटर तक भरे पानी को चीरते हुए बस पुनः रास्ते पर आ गयी। बस को थोड़ी देर एक रेस्टोरन्ट पर रोक कर सभी

ने खाना खाया और फिर चल पड़े। कुछ देर बाद बारिश भी बंद हो गयी थी और सभी यात्री भी सो गये।

सुबह सात बजे जब आँख खुली तब हम लोग जम्मू पहुँच गये थे। लगभग दो से तीन घंटे का समय और लगना था कटरा पहुँचने में। बस टेढ़े-मेढ़े रास्तों से पहाड़ों को चीरती हुई हवाओं से बात करती हुई लगभग 10 बजे कटरा बस स्टैन्ड पर पहुँच गयी। बस से उतरते ही होटल और गेस्ट हाउस वालों के एजन्टों की लाईन लग गयी। हमने टेक्नोलोजी का उपयोग करते हुए ओनलाईन ही रुम बूक करवा लिये थे। इसलिए हम तुरंत ही ऑटो लेकर होटल की तरफ चले गये।

लगभग तीन घंटे के आराम के बाद सभी खाना खाने के लिये इक्टठे हुए, खाना खाया और आगे की यात्रा का प्लान बनाया। गर्मी को देखते हुए हमने रात को ही चढ़ाई करने का तय किया। होटल आकर लगभग 5 बजे तक आराम करने के पश्चात सभी लोग अपनी अपनी बैग में जरूरी सामान जैसे की दवाई, नास्ता, कपड़े इत्यादि लेकर निकल पड़े। कटरा से सभी ने माता के दर्शन के लिए निःशुल्क यात्रा पर्ची बनवाई। पर्ची के पीछे नोट लिखा था कि रक्तचाप के रोगी चढ़ाई न करें। हृदयरोग के

चलते सभी ने मुझे चढ़ाई करने को मना किया पर मैं अब मानने वाला कहां था। बाणगंगा चेक पॉइंट पर एन्ट्री करवा के सामान की चैकिंग करवा के माता के जयकारों की बीच हमने लगभग शाम सात बजे चढ़ाई शुरू कर दी। इससे पहले हम लोगों ने पूर्णागिरी के भी दर्शन किये थे। वहाँ का रास्ता भी चढ़ाई वाला था।

सभी लोग थोड़ा चलते, थोड़ा आराम करते और फिर माता का जयकारा लगाते हुए दोहराते। जो लोग अशक्त होते हैं वह किराये की पालकी व घोड़े के सहारे और छोटे बच्चे पिदू द्वारा भवन तक का सफर आसानी से तय करते हैं। चढ़ाई करते समय मां का भवन ऐसे लग रहा था मानो बस अब पहुँच जायेंगे पर भवन तो वहीं रहता था, बस रास्ता बदल जाता था कभी ऊपर चढ़ाई कभी ढलान अब तो पैर भी जवाब देने लगे थे। लगभग छह-सात किलोमीटर खड़ी चढ़ाई करके लगभग ग्यारह बजे अर्धक्वारी पहुँचे सभी ने दर्शन किये और तीस मिनट आराम करके फिर से चढ़ाई शुरू कर दी। अर्धक्वारी से भवन तक पहुँचने के दो रास्ते हैं हमने थोड़ा आसान रास्ता, जो कि अर्धक्वारी से भवन तक चलने वाली बैटरी वाली रिक्शा के लिए बनाया गया है और लगभग छह किलोमीटर का है, उसे चुना।

चढ़ाई करते समय कटरा का नजारा अदभुत लग रहा था। अब चढ़ाई करते समय थोड़ी ठंड भी लगने लगी थी और सभी की सांस भी फूलने लगी थी, पर यही सोचकर कदम नहीं थमते थे कि अब भवन तक जल्दी पहुँच जाये। चलते-चलते कई जगहों पर चट्टानों के खिसकने के परिणाम भी देखे। देखते ही देखते लगभग रात के चार बजे हम क्लॉक रूम वाली जगह पर पहुँचे और स्नान आदि करके माता का प्रसाद ले के लगभग 5 बजे माता के दर्शन की लाईन में लग गये। हम सोच रहे थे कि बस अब तो जल्दी ही दर्शन हो जायेंगे किन्तु हमारा अंदाजा गलत था। जैसे ही हम लोग लाईन में लगे कि सी.आर.पी.एफ और श्री माता वैष्णोदेवी तीर्थ मंडल के सदस्यों ने किसी कारण से लाईन को रोक दिया, पूछने पर बताया गया कि छः से आठ बजे तक माता रानी की आरती होती है। मतलब दो घंटे और लगने थे। उस समय लग रहा था मानो जैसे मातारानी अपने भक्तों की परीक्षा ले रही हों। दो घंटे लाईन को सेकने का परिणाम ये हुआ की सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गयी। हम बिलकुल ढलान पर खड़े थे और जैसे ही पीछे से धक्का आता, लगता आज नहीं बचेंगे। सी.आर.पी.एफ ने भीड़ को थोड़ा काबू में किया और आरती खत्म होते ही लाईन शुरू हो गयी।

फिर लगभग एक घंटा और लाईन में लगकर माता के जयकारे लगाते हुए गुफा दर्शन करके हमने पिंडी के दर्शन किये और माता के दरबार में माथा टेक कर आशीर्वाद लिया।

दर्शन करने के बाद सभी ने कहा की बाबा भैरवनाथ जी के दर्शन जरूरी होते हैं नहीं तो दर्शन अधूरे माने जाते हैं। सभी लोग बाबा भैरवनाथ जी के दर्शन के लिये फिर चढ़ाई करने लगे। मैंने अपने परिवार सहित नीचे से ही बाबा भैरवनाथ जी के दर्शन कर लिये और उनके भवन तक नहीं पहुंच पाने कारण उनसे क्षमा मांगी क्योंकि अब ना तो घोड़े पे और ना ही पालकी द्वारा चढ़ाई करने की ताकत थी क्योंकि भवन से भैरवनाथ मंदिर की चढ़ाई एक दम खड़ी थी और उस समय पारा भी अपनी सीमा पार कर रहा था।

मातारानी का आशीर्वाद लेकर हम वापस जाने लगे। रास्ते में हलवा-पूरी-चना का प्रसाद ग्रहण किया और थरथराते पैरों के सहारे नीचे उतरने लगे। वहीं बैटरी से चलने वाले रिक्शा दिखते ही हमारी जान में जान आ गयी। जल्दी ही हमने रिक्शा के टिकट लिये जो कि अर्धक्वारी तक ही जाते हैं। अर्धक्वारी पहुंच कर आगे का रास्ता हमने पैदल ही तय किया। उस समय सैकड़ों भक्त चढ़ाई कर रहे थे। लगभग 42

डिग्री गरमी में उन्हें देखकर हम अपने आपको ज्यादा खुशनसीब इसलिये मान रहे थे जो चढ़ाई वो अब कर रहे हैं वो चढ़ाई हम ठंडक में ही करके आ रहे हैं। जय माता दी के जयकारे लगाते हुए हम आखिर बाणगंगा पहुंच गये और वहाँ से ऑटो कर होटल। कमरों में पहुँचते ही सीधे बिस्तर पर। थकान की वजह से पता ही नहीं चला कब नींद आ गयी और फिर रात को लगभग 8 बजे सभी की आंख खुली। नहाकर सभी ने खाना खाया और फिर एक लंबी नींद ले ली।

अगले दिन सुबह जल्दी तैयार होकर स्थानीय मार्केट घूमा, प्रसाद लिया, अन्य खरीदारी की और खाना खाकर अपने बैग लेकर कटरा रेल्वे स्टेशन से जम्मू के लिये रवाना हुए। कटरा से जम्मू तक के रेल मार्ग में कई छोटी-बड़ी सुरंगें (टनल) आती हैं और उनमें पहाड़ों से रिसता पानी टनल को और रेल को मानो वातानुकूलित कर देता है।

इस लेख द्वारा मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि जब तक मातारानी का बुलावा नहीं आता तब तक कोई भी नहीं पहुंच पाता। यह अनुभव शायद आप में से कई लोगों को हुआ होगा। यह मेरी यादगार यात्रा थी, आशा है कि आप सभी को भी मातारानी के दर्शन का मौका मिले।

माता-पिता का साथ: एक वटवृक्ष की छाँव

अरुण जांगिड़



पिछले चार वर्षों से अधिक समय से, मैं अहमदाबाद में सरकारी सेवा में कार्यरत हूँ और अपने कार्यालय की सरकारी कॉलोनी में रहता हूँ। छुट्टियों की उपलब्धता के आधार पर अक्सर मैं अपने माता-पिता से मिलने अपने गृहनगर जोधपुर जाता रहता हूँ। कई बार माता-पिता से भी आग्रह किया है कि वे भी मेरे साथ अहमदाबाद चलें। परन्तु लगता था जैसे उनके मन में डर था कि यहाँ अहमदाबाद में उनका मन लगेगा कि नहीं, स्थान परिवर्तन के कारण कहीं बीमार न हो जाएं। परन्तु इस वर्ष मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे माता-पिता फरवरी में मेरे घर आए।

दो-चार दिन यहाँ के परिवेश से परिचित होने में लग गए। उनके लिए नई जगह जो थी। वे यहाँ भी हमेशा की तरह प्रातः जल्दी उठकर दैनिक नित्य कर्मों से निवृत्त होकर पूजा-पाठ करते, शुद्ध सात्विक आहार-विहार और जीवनचर्या का पालन करते। उम्रवश होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं के चलते योग-प्राणायाम वगैरह भी करते। दिन में अमूमन घर पर रहते। वे शाम होने का इंतजार करते और शाम को

क्वार्टर से नीचे जाते, थोड़ा बहुत टहलते, कोई हाय-हेलो करता तो उसे राम राम कहते। सप्ताह भर बीत गया। फिर एक दिन एक अन्य बुजुर्ग दंपति से उनका परिचय हुआ। बातचीत करने से पता चला कि वे मेरे एक सहकर्मी के माता-पिता हैं। धीरे धीरे जान-पहचान में प्रगाढ़ता हुई। अब वे सभी लोग शाम को रोज मिलते, बतियाते। धीरे-धीरे कॉलोनी के कुछ और भी बुजुर्ग लोग पास आकर बैठने लगे। उनसे भी परिचय हुआ। अब वे सभी लोग रोजाना शाम को मिलते। योग, स्वास्थ्य, अध्यात्म, भक्ति, देश-दुनिया, समाज, खेती-बाड़ी एवं अन्य भी कई विषयों पर बातचीत कर लेते। सबको अपने-अपने क्षेत्रों से जो अनुभव प्राप्त था, उसका आदान-प्रदान हो जाता था। आपसी बातचीत से सबका मन हल्का हो जाता। सभी प्रसन्न रहते। सरकारी कॉलोनी यह रूप देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई जिसमें कर्मचारियों के माता-पिता शाम के समय आपसी मेलजोल से बहुत ही खुश दिखाई पड़ते थे। उनको गुजरात का शांत वातावरण और गुजरातियों का किसी से झगड़ा नहीं करने वाला और मिलनसारितापूर्ण

स्वभाव बहुत पसंद आया ।

मुझे भी बड़ी तसल्ली हुई कि उनका यहाँ मन लग गया । मेरे दोनों बच्चे भी पहले से अधिक खुश रहने लगे । रोज दादा-दादी से खूब बतियाते । दादा-दादी भी अपने अनुभवों को और पौराणिक किस्से-कहानियों को बड़े ही रोचक ढंग से उन्हें सुनाते थे और इसी बहाने बातों-बातों में बच्चों को संस्कारित करने का काम भी बिना किसी विशेष प्रयत्न के बड़े आराम से हो जाता था जिसके लिए हमारे पास न तो अनुभव था, न ही ज्ञान । तब समझ में आया कि भारत में बच्चों के दादा-दादी और नाना-नानी की गोद में खेलने की परंपरा क्यों पड़ी । आधुनिक समय की भागमभाग में जब माता-पिता के पास समय नहीं है, तब बहुत कुछ छूट जाता है जो बच्चों को सिखाया जाना चाहिए । जिन छोटे छोटे बच्चों को खाना खिलाना भी कोई आसान काम नहीं होता, वे बच्चे बड़े ही प्यार से दादा-दादी के साथ पेट भरकर भोजन कर लेते थे । पता ही नहीं चला कब महीना भर बीत गया । अब उन्हें अपने घर जाने की इच्छा हुई । शायद मन के किसी कोने में उन्हें अपने छोटे पुत्र और उसके बच्चों की याद सताने लगी थी । जब वे अपने घर थे, तब अक्सर इसी प्रकार की चिंता मेरे बारे में भी करते थे ।

ऐसे ही होते हैं माता-पिता जो अपनी सभी संतानों की हमेशा चिंता करते हैं । अपनी संतानों के सुख में सुखी और उनके दुख में दुखी रहते हैं । उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य होता है - अपनी संतान को सुखी देखना ।

रोजगार पाने की आकांक्षा, बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण के कारण होने वाला पलायन, परम्परागत कारोबार या खेती-बाड़ी की अपनी सीमाएं इत्यादि अनेक कारण हैं जिनकी वजह से व्यक्ति नए आर्थिक स्रोतों की तलाश में अपना मूल स्थान छोड़कर कहीं और रहने लगता है । अतः चाहते हुए भी कई बार परिवार के सभी सदस्यों का एक साथ रहना सम्भव नहीं हो पाता । परन्तु यह तो स्वीकार किया ही जा सकता है कि सुरक्षा, स्वास्थ्य, भावी पीढ़ी के समुचित विकास, भावनात्मक सहयोग, चरित्र निर्माण आदि अनेक कारणों की वजह से संयुक्त परिवार का विशिष्ट महत्व है जो कभी कम नहीं होगा । हमारे बुजुर्ग हमारी भावी पीढ़ी का उचित मार्गदर्शन कर सकते हैं । भावी पीढ़ी को सुरक्षित वातावरण एवं स्वस्थ पालन पोषण द्वारा मानव का भविष्य भी सुरक्षित होता है और उसके उत्तरोत्तर विकास का मार्ग भी प्रशस्त होता है ।

मीराबाई: जीवन परिचय

हरि गोविन्द



जोधपुर के कुड़की गाँव में रतन सिंह के घर मीराबाई ने जन्म लिया। बचपन से ही मीराबाई ने भगवान श्री कृष्ण को पति के रूप में स्वीकार किया। मेवाड़ के महाराणा भोजराज से मीराबाई का विवाह हुआ, पर उसे राजपाट का तनिक भी मोह न हुआ। कृष्ण प्रेम की प्यासी मीराबाई दीवानी सी फिरती रही। प्रेम-लगन की प्यासी मीराबाई भगवान कृष्ण के भजन गाती थी।

कृष्ण-भक्ति में लीन मीराबाई का मन संसार में नहीं लगा। गिरधर की खातिर उसने राजपाट को त्याग दिया। साधु-संतों के संग मीराबाई कृष्ण भक्ति में रमी रही और मंदिरों में भगवान श्री कृष्ण के सामने नाच-झूम कर भजन गाती रही।

मीराबाई की कृष्ण भक्ति से परेशान होकर उनके घरवालों ने उन्हें विष पिलाया, पर भगवान कृष्ण की कृपा के कारण उनका बाल भी बाँका न हुआ। उनकी कृष्ण भक्ति को संसार नहीं समझ सका और मीराबाई एक दिन हरि-चरणों में लीन हो गई। हम सब उन्हें आज भी याद करते हैं।



देवासुर संग्राम, देखिये
चलता आठों धाम, देखिये
कोई सुखी नहीं है जग में
चित्त अगर निष्काम, देखिये
हाथ मिलाते, उर न मिलाते
दक्षिण हों या वाम, देखिये
वे आये तो चित्त खिल उठा
रोगी को आराम, देखिये
सब स्वतंत्र कुछ भी करने को
नगर गली या ग्राम, देखिये
जितने दोष मढ़े जा सकते
सब सत्ता के नाम, देखिये
'राम - राम' कहने वालों का
भीतर का कोहराम, देखिये
क्या समझोगे चर्म देखकर ?
अगर देखना, काम देखिये
भोर न जिनकी उजली होती
उनकी उजली शाम, देखिये
देख लिया है भीतर का जग
अब क्या चारों धाम, देखिये
रावण घर - घर मिल जायेंगे
वन में फिरने 'राम', देखिये

मंजिल खड़ी उजालों में

मल्लिका मुखर्जी



भीग रहे हैं बच्चे प्यारे सावन की बौछारों में,
बरसाती पानी बहता है राहों के गलियारों में ।
नोंक-झोंक चलती कुछ ऐसी बाँध बना ले मिट्टी का,
रोके कैसे बहता पानी, समय कटे तकरारों में ।

भेदभाव कब करते बादल, अलग-अलग परिधानों में ?
जल पर बरसें, थल पर बरसें, बरसें रेगिस्तानों में ।
नीर प्रेम का बहता है, जब फूलों से सपने खिलते,
तलब जगेगी फुलवारी की जाने कब इन्सानों में !

खुशहाली भर दे दहशत का जाल बिछाने वालों में,
जलती आग बुझा दे पल में, बुझी नहीं जो सालों में ।
जात-पाँत के भेद मिटाकर चलें अगर हम साथ सभी,
मिल जाएगी दूर सही, पर मंजिल खड़ी उजालों में !

बटता हिंदुस्तान

प्रदीप मधेशिया



पल पल बट रहा है हिंदुस्तान,
पल पल टूट रहा है हिंदुस्तान,
वर्षों की गुलामी के बाद भी,
नहीं चेत रहा है हिंदुस्तान ।

तब बटा था रजवाड़ों में,
आज बटा है विविध धर्मों में,
सब एक ही पूर्वज की हैं संतान,
नहीं समझ रहा है हिंदुस्तान ।

अपनी बटती सोच से
हर पल पिछड़ रहा है हिंदुस्तान,
तब क्या था, आज क्या है
नहीं सोच रहा है हिंदुस्तान ।

गर हिंदुस्तान को मजबूत बनाना है,
तो आपसी भतभेद मिटना होगा,
अतीत के गिले शिकवों को भूलकर,
एक मंच पर आना होगा ।

एकजुट हिंदुस्तान के होने से,
हिंदुस्तान का झंडा लहराएगा,
चारों दिशाओं से न कोई,
फिर आँख दिखला पाएगा,

हिंदुस्तान का स्वर्णिम काल,
फिर से एक दिन आएगा ।

योग: सम्पूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी

अरुण जांगिड़



योग शब्द मूल रूप से संस्कृत के शब्द 'युज' से आया है जिसका अर्थ है मिलना, जुड़ना अथवा एक होना जो शरीर, मन और आत्मा के एकाकार होने का द्योतक है। चहुँओर योग के आकर्षण और इसके अद्भुत लाभों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव पहली बार भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री ने महासभा के 69 वें सत्र के उद्घाटन के दौरान अपने संबोधन में रखा था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग की प्रसिद्धि का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब हमारे प्रधानमंत्री ने यह प्रस्ताव रखा तो रिकॉर्ड 177 सदस्य देशों ने न केवल इसका समर्थन किया बल्कि वे इसके सह-प्रस्तावक भी बने।

योग न केवल स्वस्थ रहने की बल्कि जीवन जीने की एक परम्परागत वैज्ञानिक प्रणाली है जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी। इसका विकास सहस्रों वर्षों पूर्व हमारे ऋषियों-मुनियों ने किया था। महर्षि पतंजलि ने योग को लिखित रूप दिया और योग सूत्र की रचना

की जो आज हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं। इस प्रकार योग का उद्गम और प्रमुख केन्द्र भारत होने के कारण यह हम सभी भारतीयों के लिए गर्व की बात है।

योग का सबसे बड़ा गुण है इसका सहज साध्य, किफायती और सर्वसुलभ होना। यह एक ऐसी व्यायाम पद्धति है जिसके लिए हमें न तो कुछ विशेष व्यय करना पड़ता है और न ही किसी बाह्य साधन-सामग्री की आवश्यकता होती है। अतः इसे अमीर-गरीब, बूढ़े-जवान, सबल-निर्बल आदि सभी स्त्री-पुरुष कर सकते हैं। शरीर, मन और आत्मा को स्फूर्त और प्रफुल्लित रखने, उनकी खोई हुई शक्तियों की पूर्ति करने और आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से योग का अपना एक अलग ही महत्व है। योगासनों से बुद्धि की वृद्धि होती है और धारणाशक्ति को नई स्फूर्ति एवं ताजगी मिलती है और ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्तियाँ जागृत होती हैं। औद्योगिकीकरण, तनाव, चिंता और भाग-दौड़ से भरे इस युग में व्यस्ततापूर्ण अथवा अव्यवस्थित जीवनशैली के कारण अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख पाना एक जटिल कार्य

हो गया है, लेकिन इसी जीवनशैली में कुछ आवश्यक छोटे-मोटे परिवर्तन करके व कुछ आदतों को सुधार कर हम स्वयं को स्वस्थ, तनावमुक्त और प्रसन्न रख सकते हैं। जहाँ अन्य व्यायाम पद्धतियाँ केवल बाह्य शरीर को ही प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं, वहीं योग शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आदि सभी क्षेत्रों में मानव का विकास करने का अधिकार रखता है। इस प्रकार योग निरोगी, सन्तुलित एवं तनावमुक्त जीवन की दिशा में बढ़ता हुआ एक सकारात्मक कदम है जो श्वसन सम्बन्धी क्रियाओं, प्राणायाम और शारीरिक आसनों से मिलकर बना है। योग व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों को संतुलित रूप में निखारता और विकसित करता है जिससे हमारी सुप्त शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं।

आज पूरे विश्व में योग की प्रसिद्धि फैल चुकी है जो केवल इस कारण नहीं है कि इससे रोगों से मुक्ति मिलती है अथवा रोगों की तीव्रता कम होती है बल्कि इस कारण है कि योग करने से व्यक्ति को मनोदैहिक विकारों से मुक्ति मिलती है और उसे एक उत्तम जीवन का अनुभव होता है। इन्हीं कारणों से इन दिनों योग पूरे विश्व में बेहतर जीवनशैली का आधार बन गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी स्वास्थ्य को

मात्र रोग का अभाव नहीं माना है बल्कि उसे एक सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खुशहाली की अवस्था के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें उसने चौथे आयाम यानि आध्यात्मिक सुख का भी सुझाव दिया है। संपूर्ण स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक सुख के मिश्रण के माध्यम से प्राप्त होता है जो योग से संभव है।

योग का नियमित अभ्यास हर प्रकार से हमारी क्षमता बढ़ाता है और हमे विश्वास से भरपूर रखता है। योग के नियमित अभ्यास से ही शक्ति, सहनशीलता और आत्म-नियंत्रण बढ़ते हैं, जिससे हमारे भीतर जीवन के प्रति आशाओं से भरा एक सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है, आत्मबोध होता है तथा शांति और प्रसन्नता से भरपूर जीवन जीने के लिए अधिक ऊर्जा की अनुभूति होती है। इस प्रकार योगाभ्यास शारीरिक मजबूती तो प्रदान करता ही है, साथ ही बहुमूल्य मानसिक समृद्धि भी प्रदान करता है। संतुलन की अनुभूति के साथ योग से मस्तिष्क एवं शरीर को एकाकार किया जा सकता है और समग्र रूप से स्वस्थ जीवन जीया जा सकता है।



उद्घाटन समारोह में 'आरोहण 2014-15' का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि महोदया एवं प्रधान निदेशक महोदय।



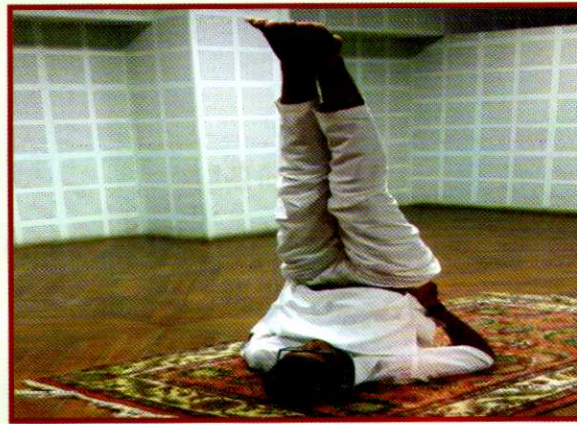
उद्घाटन समारोह में सम्भाषण देते हुए मुख्य अतिथि महोदया डॉ. मीरा रामनिवास, आई.पी.एस. ए.डी.जी.पी. (लॉ एंड आर्डर) गुजरात



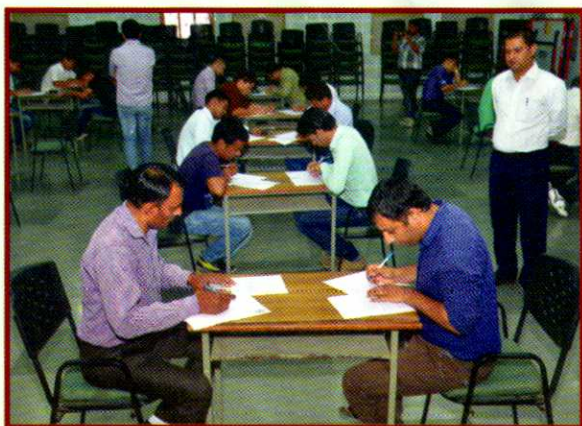
कु. पूजा शर्मा को खेल गतिविधियों में बेहतर प्रदर्शन के लिए सम्मानित करते प्र.म.ले. महोदय



उद्घाटन समारोह में उपस्थित कार्यालय सदस्यगण।



अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस की झलकियाँ



पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते कार्यालय सदस्य



वर्ष 2014-15 में हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्र.म.ले. से अचल शील्ड प्राप्त करते हुए प्रशासन अनुभाग की व.ले.प.अ. और स.ले.प.अ.



प्रतियोगिता में प्रस्तुति देते हुए श्री जितेन्द्र सिंह



प्रतियोगिता में मंच पर उपस्थित निर्णायकगण



प्रतियोगिता में प्रस्तुति देते हुए श्री निशांत बोयल



प्रतियोगिता में मंच पर उपस्थित निर्णायकगण



नराकास, अहमदाबाद की प्रतियोगिता 'शब्द एक सोच अनेक' में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री नरेश मलिक



नराकास, अहमदाबाद की प्रतियोगिता 'काव्य पठन' में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बालमुकुंद त्रिपाठी



प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता की झलकियाँ



प्रधान महालेखाकार महोदय के विदाई समारोह की झलकियाँ



पखवाड़े के समापन समारोह में सम्भाषण देती हुई मुख्य अतिथि महोदया डॉ. रंजना अरगड़े



समापन समारोह में मुख्य अतिथि महोदया को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्रधान निदेशक, साथ है प्र.म.ले. महोदय



प्र.म.ले. महोदय से प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए श्री वजीर सिंह



मुख्य अतिथि महोदया से प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए श्री शिवेश उपाध्याय



मुख्य अतिथि महोदया से प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए श्री प्रकाश महावर



प्रधान निदेशक महोदय से प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए श्री अमरसूर्या

जिम्मेदार नागरिक के रूप में छात्र की भूमिका

सिमरन राठौर

सुपुत्री श्री छत्रपाल सिंह राठौर

आज के छात्र कल के नागरिक होंगे उनके कन्धों पर देश के निर्माण का भार होगा। छात्र ही वह शक्ति का सागर है जिसके द्वारा राष्ट्र, गौरव का स्थान प्राप्त करता है। विद्या के द्वारा मानव का अज्ञान दूर होता है तथा उसमें सोचने समझने तथा निर्णय लेने की क्षमता आती है। प्रत्येक देश में असमानतायें, गरीबी, सामाजिक अन्याय, साम्प्रदायिकता सम्बन्धी समस्याएँ तो होती ही हैं। इन समस्याओं से मुक्ति प्राप्त किये बिना कोई भी देश प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है। इन सभी समस्याओं के सन्दर्भ में युवकों का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। प्रत्येक राष्ट्र सुखद तथा गौरवशाली भविष्य की कामना करता है। इसका सर्वाधिक लाभ आने वाली पीढ़ी को मिलता है तथा वही हानि झेलती है। अतः आज का छात्र जितना प्रबुद्ध कुशल, सक्षम तथा प्रतिभा सम्पन्न होकर एक जिम्मेवार नागरिक के रूप में उभरेगा उतना ही देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। मनुष्य के जीवन की आधारशिला छात्र जीवन होता है। शिक्षा, अज्ञान व अन्धकार से छूटकारा दिलाती है। वर्तमान स्वतंत्र भारत में छात्र का कर्तव्य है कि गाँवों में घर-घर जाकर शिक्षा का प्रसार करे, अशिक्षित को शिक्षित बनाये। यदि हमारे देश का प्रत्येक छात्र अन्य लोगों को पढ़ाने का व्रत धारण करते तो अशिक्षा इस भारत से हट जाएगी। यह कार्य आज का छात्र ही अच्छी तरह कर सकता है।

सुखी दाम्पत्य जीवन

रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र



भारतीय संस्कृति में दाम्पत्यजीवन का महत्वपूर्ण स्थान है। इससे ही सामाजिक जीवन का ताना बाना बुना जाता है। सामाजिक जीवन पल्लवित, पुष्पित व फलित होता है : भावी पीढ़ियों की नींव पड़ती है, सामाजिक जीवन को पोषण मिलता है, नाते सुदृढ़ होते हैं। इसलिये आवश्यक है कि दाम्पत्य जीवन में माधुर्य हो, बहुधा देखने में आता है कि माधुर्य का स्थान कटुवाहट व कलुषता ने ले लिया है परस्पर लड़ाई — झगड़े होते रहते हैं। पति पत्नी का संबंध विच्छेद हो जाता है, बच्चे अलग हो जाते हैं पति-पत्नी को देखो तो शिकायतों की गोलियाँ लेकर खड़े हुये हैं। दाम्पत्य जीवन टूटते बिखरते चले जाते हैं। अच्छा हो कि पति व पत्नी परस्पर अच्छाईयों व बुराईयों के साथ स्वीकार करें और परस्पर निंदा - आलोचनायें न करें। दाम्पत्य जीवन को सुखी, सफल व मधुर बनाये रखने के लिये कतिपय छोटी छोटी बातों का उल्लेख किया जाता है।

परस्पर पर्याप्त समय दें

हर व्यक्ति की अपनी जीवन — शैली होती है। स्वभाव रुचियाँ, रहन — सहन के ढंग

अलग होते हैं, यह बात पति व पत्नी दोनों को समझना चाहिए। अनुकूलन करना चाहिये। अपने हक अपने अहंकार दाम्पत्य जीवन को नष्ट कर देते हैं, आवश्यक है कि एक दूसरे को पर्याप्त समय दें, एक दूसरे को समझे तथा परस्पर आदर दें व अनुकूलन करें, अहंकार को बीच में आने न दें। दोनों समान हैं, न कोई बड़ा है न कोई छोटा है। परस्पर विशेषताओं को समझे, और उन्हें आदर दें। एक दूसरे को डांटना, डपटना अनादर करना त्याग दें। देखने में आता है कि—पति माँ-बाप, भाई-बहिन की आलोचनायें करते हैं। पत्नी आलोचना करें तो सहन नहीं। उचित तो यही है कि निन्दा-आलोचनाओं से बचें तथा विशेषताओं को महत्व दें। इस बात का ध्यान रखें कि पत्नी अन्य घर से आती है, घर के सभी सदस्यों से अनुकूलन कर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है, अपने माँ-बाप, भाई, बहिन को छोड़कर पति के घर को ही अपना घर समझती है तथा सभी से यथायोग्य व्यवहार करती है।

परस्पर समय देने से दाम्पत्य जीवन में नवीनता अनुभव होती है। संबंधों में मधुरता

बढ़ती है। कुछ समय के लिये पर्यटन पर चले जायें, तीर्थाटन करें, तीर्थाटन से ज्ञान-वर्धन होता है तथा परस्पर जीवन की समझ भी बढ़ती है। एक दूसरे के लिये त्याग तप की भावना बलवती होती है। पत्नी अपने मायके जाती है तथा पति अपनी ससुराल जाता है तो मान-सम्मान व प्रेम मिलता है जिनसे जीवन में मधुरता व नमी प्राप्त होती है।

परस्पर विश्वास एवं निष्ठा

दाम्पत्य जीवन में परस्पर विश्वास एवं निष्ठा अनिवार्य होते हैं। इनसे व्यक्ति सशक्त बनते हैं तथा सम्बन्धों में दृढ़ता बनी रहती है। आवश्यक है कि हर प्रकार के भय व संकोच से मुक्त हो कर अपने मन के भाव खुलकर व्यक्त करें। कोई मतभेद या मनमुटाव होने पर उसे त्वरित दूर कर लें। एक दूसरे में गुणों को खोजें और उनका सम्मान करें। मनस् विद तो यहाँ तक कहते हैं कि जिस पति व पत्नी में प्रेम होता है उनकी कामवासना कम हो जाती है, वे नित्य नये बने रहते हैं।

बच्चों के पीछे न झगड़े

अकसर देखा जाता है कि पति-पत्नी में बच्चों को लेकर झगड़े होते हैं। ऐसे लोगों को अपरिपक्व व कम समझदार माना जाता है। बच्चों की समस्याओं को परिपक्व दृष्टि से देखना

चाहिये। बच्चों को लेकर कभी सम्बन्धों में कड़वाहट नहीं आनी चाहिये। बच्चे तो दोनों के हैं।

सकारात्मक दृष्टि रखें

जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टि कभी नहीं रखें। दाम्पत्य जीवन नकारात्मकता से नष्ट हो जाता है। सकारात्मक दृष्टि से सम्बन्धों को सुधारा व सँवारा जा सकता है।

एक सी परिस्थितियाँ जीवन में नहीं रहतीं सुखद-दुखद प्रसंग आते ही रहते हैं। जो सुखद पल मिले उसका भरपूर आनंद लें तथा दुखद परिस्थितियों का मिलजुलकर धैर्य रखकर सामना करें। चुनौतियों को स्वीकार करें। हर्षोल्लास के लिये बड़े अवसर की प्रतीक्षा न करें। जो भी छोटे छोटे अवसर मिलें, सफलतायें मिले, उनकी खुशियाँ मनायें। खुशियाँ अन्यो को बाँटे भी।

दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिये एक दूसरे के प्रति निष्ठावान रहें। घर व बाहर के कार्यों में परस्पर सहयोग करें, खोट न ढूँढें, बहुत अधिक आशायें व अपेक्षायें भी न रखें। छोटी-मोटी गलतियों, भूलों पर ध्यान न दें। सहनशील बने। सोंचें कि हम एक दूसरे के लिये बने हैं। पति व पत्नी, दो शरीर एक प्राण होते हैं।

प्यारी सी वाट्सअप कविता

विद्या अय्यर



जोड दिये सब टूटे रिश्ते,

बरसों पहले छूटे रिश्ते ।

फैमिली को परिवार कर दिया,

वाट्सअप ने कमाल कर दिया

स्कूल के सब यार मिल गए,

यादों के अंबार मिल गए

खुशियों भरा संसार कर दिया,

वाट्सअप ने कमाल कर दिया

सेंस ऑफ ह्यूमर तेज हो गया

भोंदू भी अंग्रेज हो गया

कॉपी पेस्ट का जाल कर दिया,

वाट्सअप ने कमाल कर दिया

बीवी फोन में बिजी हो गई,

पति भी इसमें कहीं खो गए,

लडना-झगडना बंद कर दिया

वाट्सअप ने कमाल कर दिया

यदि सफलता एक सुन्दर पुष्प है तो विनम्रता उसकी सुगन्ध ।

जिन्दगी में जो चाहो हाँसिल कर लो, बस इतना खयाल रखना कि आपकी मंजिल का रास्ता,
लोगों के दिलों को तोड़ता हुआ न गुजरे ।

(संकलित)

‘समन्वित स्वर’ : एक अवलोकन

मल्लिका मुखर्जी



कैलिफोर्निया के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की एक्स विजिटिंग स्कोलर एवं अहमदाबाद के साबरमती नदी के तट पर स्थित भव्य संस्था गुजरात विद्यापीठ के हिन्दी विभाग की पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. मालती दुबे जी के हिन्दी लेखों की गुजराती में अनूदित पुस्तक ‘समन्वित स्वर’ पढ़ने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। बहुमूल्य मोती से 43 लेखों को एक माला में पिरोकर सुन्दर पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का भगीरथ कार्य किया है उनके ही शिष्य डॉ. गायत्रीदत्त मेहता तथा डॉ. ननकुभाई करपड़ा ने। गुरु के प्रति उनका ये सम्मान और समर्पण भाव है। शिक्षण तथा हिन्दी साहित्य जगत के 32 महानुभावों ने अपने समन्वित प्रयास से मालती जी के इन हिन्दी लेखों का गुजराती में अनुवाद कर ‘वसुधैवकुटुम्बकम्’ की भावना विकसित करने की दिशा में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। गांधीयुगीन हिन्दी पत्रकारिता लेख का गुजराती अनुवाद खुद डॉ. मालती जी ने किया है। आठ अनुवादकों के दो-दो लेख हैं। गुरु के प्रति असीम स्नेह का यह श्रेष्ठ उदाहरण है। पुस्तक का मुखपृष्ठ ही समन्वय का परिचायक है।

भारत में अनेक भाषाएँ होने से भारतीय साहित्य की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण है। एक भाषा के साहित्य को अन्य भाषा में अनुवाद करने से भारतीय साहित्य में समन्वित सांस्कृतिक एवं साहित्यिक क्षेत्र का निर्माण होता है। राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सौहार्द को इसमें भावों की विविधता और अनेक रूपता के सहज दर्शन होते हैं। समाज के नये नये स्वरो, सिद्धांतों तथा सन्देशों को अनुवाद के माध्यम से समन्वित करना, अनुवादकों का मुख्य धर्म एवं दायित्व है जो इन अनुवादकों ने दिल की गहराइयों से निभाया है। वर्तमान समय की भागदौड़ और चकाचौंध वाले माहौल में जहाँ टूटते सपने, बिखरती आकांक्षाएँ और जीवन जीने की लालसाओं के बिखराव में इंसान ने अपने आपको व्यस्त कर लिया है, ‘समन्वित स्वर’ जैसी पुस्तक को हम आत्मबल की श्रृंखला के रूप में पाते हैं, जिस का पठन सुकून और सुख की अनुभूति देता है।

इन लेखों में इतना सारा वैविध्य है कि बिना इस पुस्तक को पढ़े अंदाजा लगाना कठिन है। कालजयी महाकाव्य ‘रामचरितमानस’ के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की कर्मभूमि काशी

के इतिहास के साथ-साथ उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए पहले लेख से शुरू हुई लेखन यात्रा भारतीय भाषाओं में छुपी विभिन्नता में एकता की गलियों से गुजरते हुए कैलिफोर्निया के ग्रीष्म विद्यालयों में कुछ देर ठहरती है, जहाँ प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को गरमी की छुट्टियों में पढ़ाई के साथ-साथ खेल, सामान्य ज्ञान, विभिन्न स्पर्धाओं का आयोजन कर बच्चों के व्यक्तित्व विकास में मार्गदर्शन देने का कार्य होता है। जर्मनी और जापान के विश्वविद्यालयों में हिन्दी के शिक्षण के लिए किये गए आयोजनों की विस्तृत जानकारी पाते हुए जब हम आगे बढ़ते हैं तब सन 2001 में भारतीय भाषा संस्कृति संस्थान, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद तथा विश्वसाहित्य संस्कृति संस्थान, दिल्ली द्वारा आयोजित बारहवें अंतरराष्ट्रीय हिन्दी अधिवेशन की सुन्दर झलक पाते हैं जिसमें देश विदेश के अनेक विद्वान उपस्थित थे। आगे चलकर हम हिन्दी को वैश्विक परिदृश्य में देख पाते हैं। अमरीका के 35 विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है। रशियन विश्वविद्यालयों में प्रेमचंद की रचनाएँ बहुत लोकप्रिय हैं। कबीर, तुलसी, निराला, प्रसाद, गुप्त, बच्चन, यशपाल, नागार्जुन आदि के साहित्य का भी अनुवाद तथा प्रकाशन कार्य

चल रहा है। इंग्लैंड, फ्रांस, होलेन्ड, स्वीडन, कोरिया, थाईलैंड, नेपाल, बर्मा, सिंगापुर, बेंकोक, त्रिनिदाद, फिजी, मोरीशस कुल मिलाकर हिन्दी संपर्क भाषा के साथ अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने जा रही है। विश्व दर्पण में भारतीय भाषा दर्शन पर विषद चर्चा भी है। हिन्दी के उपरांत संस्कृत, उर्दू, तमिल, मराठी, मलयालम, गुजराती, पंजाबी भाषाएँ भी विश्व के विविध विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं के अध्ययन में शामिल हैं। हिन्दी की उन्नति में आचार्य लक्ष्मीनारायण दुबे का योगदान भी उनके एक लेख में विस्तृत रूप से दर्शाया गया है। पुस्तक का एक और मोती है अनन्य हिन्दी सेवी, भारतीय संस्कृति प्रेमी, मानस-मर्मज्ञ, अप्रतिम कोशकार तथा बाईबल के श्रेष्ठ हिन्दी अनुवादक, भारत सरकार द्वारा सन 1974 में पद्म भूषण से सम्मानित, इसाई सन्यासी, बेल्जियम निवासी फादर बुल्के का रेखाचित्र। दरअसल एक विदेशी होने के बावजूद बुल्के ने हिन्दी की सम्मान वृद्धि इसके विकास, प्रचार-प्रसार और शोध के लिये गहन कार्य कर हिन्दी के उत्थान का जो मार्ग प्रशस्त किया और हिन्दी को विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने की जो कोशिशें कीं, वह हम भारतीयों के लिये प्रेरणा का विषय है।

बिहार के मेघावी साहित्यकार डॉ. शिववंश

पाण्डेय, मोरीशस के महात्मा गाँधी संस्थान की निदेशक प्रो. रश्मि रामधोनी, गुजरात के शिक्षण जगत के डॉ. रवीन्द्र दवे जैसे महानुभावों के साक्षात्कार तथा गुजरात के कवि महेरामण सिंह द्वारा रचित प्रबंध काव्य 'प्रवीणसागर', नारी गरिमा का उत्कृष्ट महाकाव्य 'प्रम्लोचा', सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित महाकाव्य 'सत्यकाम', कवि विराट जी की 'विराट सतसई' की सुन्दर समीक्षाएँ पढ़ने को मिलती हैं। पत्रकारिता एवं शिक्षण सम्बन्धी चिन्तन लेख के अलावा अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा में रचे गए साहित्य का आस्वादन करते लेख भी हैं। भारत के महान शिक्षाविद तथा विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई की जीवनशैली, चीन के दार्शनिक नेता ताओ की विचारधारा, महर्षि पतंजलि की योग विद्या का विवेचन, स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का हिन्दी चिन्तन जैसे विषयों पर बेशकीमती लेख भी इस पुस्तक में उपलब्ध हैं।

संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण पाणिनि तथा उनके व्याकरण ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' का परिचय हमें इस पुस्तक में मिलता है। भक्तिकाल की सगुण धारा की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि 'रामचरितमानस' के रचयिता

गोस्वामी तुलसीदास जी, कृष्ण-भक्ति शाखा की प्रमुख कवयित्री मीरा बाई, हिन्दी साहित्य के भक्ति कालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक कबीर के व्यक्तित्व पर सुन्दर लेख भी इस पुस्तक में सम्मिलित हैं। फिर उर्दू साहित्य के कवि, गज़लकार मिर्जा असदुल्लाखां 'गालिब' का रेखाचित्र। अंत में इक्कीसवीं सदी में सम्पूर्ण विचार के रूप में महर्षि पतंजलि की योग विद्या का विवेचन।

वर्ष 2004 में गुजरात के महामहिम राज्यपाल श्री नवलकिशोर शर्मा द्वारा 'श्रेष्ठ अध्यापक' के रूप में सम्मानित डॉ. मालती दुबे जी वर्तमान में अहमदाबाद में 'हिन्दी साहित्य परिषद' की संयुक्त मंत्री के पद पर कार्यरत हैं। तुलसी का 'रामचरितमानस' उनके जीवन की प्रेरणा है। नारी शिक्षण का महत्व मालती जी ने अपने लेख 'महिला शिक्षण की आवश्यकता और उनकी समस्याएँ' में दर्शाया है - शिक्षित स्त्री के आचरण का असर उसकी संतानों पर अवश्य होता है। शिक्षित स्त्री की संतान स्वस्थ और संस्कारी होती है। स्त्री शिक्षा पर नेपोलियन के विचार को भी उन्होंने इस परिप्रेक्ष्य में रखा है, 'पुरुषों की शिक्षा व्यक्तिगत होती है, पर स्त्रियों की शिक्षा समाजलक्षी होती है।' तुलसीदास और मैथिलीशरण गुप्त की नारी भावना को भी अपने लेखों में उद्भाषित किया

है। पुस्तक में श्रीमती दुबे का हिन्दी भाषा के प्रति प्यार, साहित्य के प्रति निष्ठा एवं अध्यापन के प्रति उनके समर्पण भाव का जीवंत चित्रण मिलता है जो पाठक को एक इन्द्रधनुषी दुनिया में ले जाता है।

पुस्तक में सभी अनुवादकों का संक्षिप्त परिचय देकर उन्हें उचित सम्मान दिया गया है। यह अनुवादक ही है जो दो संस्कृतियों, राज्यों, देशों एवं विचारधाराओं के बीच सेतु का काम करता है। कविवर हरिवंशराय 'बच्चन' जी, जो स्वयं एक कुशल अनुवादक रहे हैं, ने ठीक ही कहा है कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच मैत्री का पुल है। वे कहते हैं - 'अनुवाद एक भाषा का दूसरी भाषा की ओर बढ़ाया गया मैत्री का हाथ है। वह जितनी बार और जितनी दिशाओं में बढ़ाया जा सके, बढ़ाया जाना चाहिए।' बच्चन जी के विचार इस संदर्भ में द्रष्टव्य हैं - मैं, अनुवाद को यदि मौलिक प्रेरणाओं से एकात्म होकर किया गया हो, मौलिक सृजन से कम महत्त्व नहीं देता। अनुभवों ही जानते हैं कि अनुवाद मौलिक सृजन से अधिक कितना कठिन-साध्य होता है। मूल कृति से रागात्मक सम्बन्ध जितना अधिक होगा, अनुवाद का प्रभाव उतना ही बढ़ जाएगा। वस्तुतः सफल अनुवादक वही है जो अपनी दृष्टि भावों, कथ्य, आशय पर रखे। साहित्यानुवाद में

शाब्दिक अनुवाद सुन्दर नहीं होता। एक भाषा का भाव या विचार अब अपने मूल भाषा-माध्यम को छोड़कर दूसरे भाषा-माध्यम से एकात्म होना चाहेगा तो उसे अपने अनुरूप शब्दराशि संजोने की छूट देनी ही होगी। यहीं पर अनुवादक की प्रतिभा काम करती है और अनुवाद मौलिक सृजन की कोटि में आ जाता है।

भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में अनुवाद साहित्यिक धरातल पर एकात्मकता की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेखिका ने अपने हिन्दी साहित्यिक लेखों को गुजराती में अनुवाद करने की अनुमति देकर कर्मभूमि गुजरात के प्रति अपना असीम प्रेम व्यक्त किया है। साथ-साथ सभी अनुवादकों ने 'समन्वित स्वर' का गुजराती रूप हमारे सामने प्रस्तुत कर भारत की भाषायी सद्भावना को मजबूत करने की दिशा में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इस पुस्तक के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों तथा प्रकाशक को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ। डॉ. मालती जी से जब भी मुलाकात का अवसर प्राप्त होता है, उनका सौहार्दपूर्ण व्यवहार मन को एक सुखद अनुभूति देता है। उनसे परिचय होना मेरा सौभाग्य है। उनकी लेखन यात्रा अविरल चलती रहे, इसी प्रार्थना के साथ समन्वित स्वर के प्रकाशन का हृदय से स्वागत करती हूँ।



मेरा भारत देश महान,
जय जय जय हिंदुस्तान,
संस्कृति कला जहाँ की जान,
है वो भारत देश महान ।

जहाँ के कर्ण हैं किसान,
पैदा करते कनक और धान,
होता है जिसका गुणगान,
है वो भारत देश महान ।

जहाँ पर हैं इसरो जैसे संस्थान,
पूरा करते सबसे कम लागत में,
चंद्रयान से चन्द्रमा तक का अभियान,
है वो भारत देश महान ।

जहाँ पर जन्मे आर्यभट्ट जैसे विद्वान
कर दिया देश का रोशन नाम
देके संसार को शून्य का ज्ञान
है वो भारत देश महान ।

जहाँ के योद्धा होते वीर,
कठिन क्षणों में न खोते धीर,
टूट पड़ते हैं शत्रु पर,
देते हैं छाती को चीर ।

है वो माताएं महान,
जिन्होंने जने हैं वीर जवान,
बिस्मिल, सुभाष हैं कुछ के नाम,
है वो भारत देश महान ।

जहाँ पैर पसारी है साम्प्रदायिकता,
विविध मजहबों के दरम्यान,
बांधे है एक सूत्र में सबको,
है वो भारत देश महान ।

जीवन में परिश्रम का महत्व

छत्रपाल सिंह राठौर



वर्तमान युवा के भीषण जीवन संघर्ष में वही व्यक्ति या जीवन विजयी हो सकता है, जो परिश्रम को जीवन एवं आलस्य को मृत्यु के रूप में स्वीकार करे। परिश्रम ही हमारे कार्य-क्षेत्र की सफलता का द्योतक है। प्रकृति का सबसे छोटा प्राणी चींटी भी अपनी समस्याओं को अपने परिश्रम द्वारा सरलता से सुलझा लेती है, तो मनुष्य तो पृथ्वी पर सर्वाधिक विशिष्ट प्राणी है। वह कठिन से कठिन कार्य को अपने श्रम और प्रयास से भला क्यों नहीं सरल बना सकता। कर्मवीर और साहसी व्यक्ति के लिए संसार का कोई कार्य कठिन नहीं होता। सफलता उसी व्यक्ति का वरण करती जिसने उसकी प्राप्ति के लिए श्रम किया है। उद्यम और कठिन परिश्रम से ही मनुष्य की कार्य सिद्धि होती है, केवल इच्छा मात्र से नहीं। किसी भी कार्य में यदि भरपूर परिश्रम किया जाये तो उसकी सफलता में अपूर्व आनन्द का एहसास होता है। परिश्रमी को कभी भी किसी वस्तु का अभाव नहीं होता है, वह किसी के सामने हाथ फैलाकर गिड़गिड़ाता नहीं है, क्योंकि उसको अपने परिश्रम पर भरोसा होता है। परिश्रम से जो सबसे बड़ा लाभ है, वो है-आत्मिक शांति। मनुष्य अपने जीवन में जितना परिश्रमी रहा, जितना अधिक से अधिक संघर्ष उसने किया, उतनी ही उसने सफलता अर्जित की। अतः हम कह सकते हैं कि चाहे भौतिक उन्नति हो या अभौतिक, प्रत्येक के लिए मनुष्य को पूर्ण परिश्रम करने की आवश्यकता है।

सपने देखिये, साकार भी करिये

रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र



जन-सामान्य की सोच है कि स्वप्न मात्र युवक - युवतियों को ही देखने चाहिये। स्वप्न देखने का अधिकार सबको है और प्रगति के मार्ग सबके लिये खुले हुये हैं। सरकारी नौकरियों में आयु का बन्धन होता है। जबकि निजी क्षेत्र में अनुभव को अधिक महत्त्व दिया जाता है। आयु कोई बन्धन नहीं होता स्वप्न देखने के लिये उम्र की कोई सीमा नहीं होती।

कुछ भी सीखने, प्रगति करने के रास्ते कभी बंध नहीं होते। हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि किस्मत के सात स्वप्न भी बदलते हैं, बचपन के स्वप्न तरुणावस्था में काम नहीं आते कभी कभी ऐसा भी होता है कि कुछ बनना चाहते थे, बन कुछ और ही जाते हैं। आयु बढ़ने के साथ कामनायें भी बदल जाती हैं।

कुछ करने का मन में संकल्प हो तो विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है। संकल्प मन से होता है। मन में बड़ी शक्ति होती है कहते हैं कि लियोनार्डो द विन्ची ने 'मोनालिसा' प्रसिद्ध पेन्टिंग 51 वर्ष की आयु में बनायी थी जो सर्वाधिक प्रशंसित हुई। नेल्सन

मण्डेला लम्बे संघर्ष के बाद 75 वर्ष की आयु में दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बने। यदि उनकी सोच नकारात्मक होती तो इतनी विकास न कर पाते। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस का लेखन 90 वर्ष की आयु में प्रारम्भ किया था। अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं कि व्यक्तियों ने अनवरत संघर्ष के पश्चात सफलता प्राप्त कर अपने सपने सच किये।

हर व्यक्ति सपने संजोता है उन्हें पूर्ण करने का प्रयत्न भी करता है। जब व्यक्ति सपनों को साकार करने का प्रयत्न करता रहता है तो उसका जीवन प्रगति के सोपान बढ़ता जाता है। हमारे यहाँ लोग जैसे ही अधेडावस्था पार करते हैं, सपनों पर विराम सा लग जाता है। वे सोचते हैं कि जो बनना था, बन गये अब और क्या बनना है। ऐसा सोचना ठीक नहीं है। सपने देखने से प्रगति व विकास के मार्ग खुलते हैं।

अंग्रेजी कवि सी. रोस लुई का कथन है कि हम कभी इतने बूढ़े नहीं होते कि सपने न देख सके। इसलिये हमको सपने देखने व उनको साकार करने के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिये।

मन में साहस हो तो स्वप्न पूरे होते हैं। शरीर व मन की शक्तियाँ भी साथ देने लगती हैं। जिन व्यक्तियों की नकारात्मक सोच होती है वे न कभी जीवन से संतुष्ट होते हैं तथा न कोई सार्थक कार्य कर पाते हैं। वे अगर - मगर के चक्र से बाहर नहीं निकल पाते हैं। सफल होने के प्रयास ही छोड़ देते हैं।

जो हमारे लिये उचित है उसे करने में कभी संकोच नहीं करना चाहिये। व्यक्ति के पाँव यदि गलत पथ पर पड़ गये हैं तो उन्हें खींचकर ठीक रास्ते पर बढ़ाने में संकोच नहीं करना चाहिये। तभी जीवन अच्छा बन सकेगा। जीवन सफल बनाने के प्रायस निरन्तर करते रहना चाहिये इसके लिये आवश्यक है कि सर्व प्रथम हम यह सुनिश्चित करें कि हमको क्या चाहिये।

योजनानुसार छोटे छोटे लक्ष्य बनाये, जैसे टी-20 में 6 ओवर 10 ओवर, 15 ओवर व 20 ओवर में कितने रन बनाने हैं तथा विकेट भी बचा के रखने हैं। छोटे छोटे लक्ष्यों की प्राप्ति सरल होती है और कार्य कुशलता भी बढ़ती है। कार्य करते समय दुर्बलताओं पर भी ध्यान रखना चाहिये तथा उन्हें दूर करने का प्रयत्न भी करना चाहिये। जिस कार्य के जो लोग

विशेषज्ञ होते हैं। उनसे समय-समय पर परामर्श लेने से प्रगति की गति बढ़ती है।

जीवन में कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिनमें आयु हस्तक्षेप नहीं करती, जैसे अध्ययन करना, परोपकार करना, प्रसिद्धि पाना, सफलता पाना, बुराईयों को त्यागना, अच्छा स्वभाव बनाना, पर्यटन का लेखन कार्य करना।

जीवन में सफल होने के लिये उम्र की अपेक्षा इच्छा शक्ति की आवश्यकता होती है। प्रतिकूल परिस्थितियों भी अनुकूल बन जाती हैं। यदि हम पक्का निश्चय कर लें तो क्या नहीं कर सकते। पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. कलाम विद्यार्थियों से यही कहते थे कि सपने देखो और उन्हें पूर्ण भी करो। सपने देखोगे तो पूर्ण करने के प्रयत्न भी होते जायेंगे, किसी दार्शनिक का कथन है कि मनुष्य जब तक अपने सपने पूरे करने में लगा रहता है तब तक वह बूढ़ा नहीं होता। इसलिये जीवन भर सपने देखने चाहिये तथा उन्हें पूर्ण करने के प्रयत्न भी करने चाहिये। प्रयत्न करने में भी बड़ा आनंद है। स्वप्न जब साकार होता है तो उस आनंद का कहना ही क्या ?



मुझे प्यार है सब पथिकों से, मैं कदमों से कदम मिलाता;
तुम भूले को और भूलाते, मैं मंजिल की राह दिखाता ।

हुआ यहाँ पर कौन किसी का, किसने किस से तोड़ा नाता;
तुम उछालते हो बातों को, मैं होठों पर मौन सजाता ।

तुम को प्यारे आँधी - तूफ़ाँ, तुम को प्यारा पतझड़ सूना,
तुम उजाड़ते हो बागों को, मैं सहारा में फूल खिलाता ।

तुम धर्मों की बाड़ बनाते, गली-गली में आग लगाते;
तुम तलाशते हो आहों को, मैं घावों के दर्द मिटाता ।

मानव, तुम्हें बनाकर सोचा स्वर्ग बसेगा अब धरती पर;
सारी सृष्टि रची है मैंने, लेकिन अब पल-पल पछताता ।



(1)

निर्मल गंगा
हमने ही मैली की
हम ही साफ

(2)

संघर्ष बिन
जीवन जंग लगे
हथियार — सा

(3)

अहं, ममता
दोनों बड़े बंधन
मुक्ति कठिन

(4)

ज्ञान न योग
प्रेम को बांध पाये
प्रेम से बंधे

(5)

भक्ति विहीन
श्वान — सा प्रताड़ित
तिरस्कृत भी

(6)

मान का दान
सब को ही प्रसन्न
प्रेम में वृद्धि

(7)

अटूट श्रद्धा
अटूट शान्ति भी है
शान्ति में सुख

(8)

ध्यान, प्रार्थना
प्रेम शक्ति की कुंजी
प्रेम से भेंट ।

भूख की दुनिया में ईमान बरकरार है ।

बी.के. परमार



एक दिन कल्याण अधिकारी जो चैन्नई म.ले.श्री कचेरी में कार्यरत है । उनका मुझे फोन आया । उन्होंने कहा कि मेरे कार्यालय में कार्यरत लेखाकार अहमदाबाद में एलिसब्रिज विस्तार में स्थित होटल में पंद्रह दिन से रह रहा है और उसने हमारी कार्यालय को वी.आर.एस. के लिए आवेदन यह कहते हुए प्रेषित किया है कि उनकी निवृत्ति के पश्चात ग्रेज्युटी और अन्य लाभों की राशि जो 2 करोड़ होती है वह मुझे जल्द से जल्द दी जाए । होटल में स्थित लेखाकार की उपरोक्त बताई गई बात से मुझे पता लगा की उनकी दिमागी हालत ठीक नहीं होगी क्योंकि सेवानिवृत्ति होने वाले अधिकारियों को 20-25 लाख की राशि मिलती है । मेरी इस सोच की पुष्टि करते हुए कल्याण अधिकारी ने बताया कि वह लेखाकार जी.पी.एम. अकाउंट में से 4 चार लाख निकाल कर आया हुआ है और उसके भाई व बहन चैन्नई कार्यालय में कार्यरत है । वह अहमदाबाद आ रहे हैं । मुझसे उचित सहायता करने का अनुरोध किया गया । इस सिलसिले में महालेखाकार श्री, चैन्नई की सिफारिश प्रधान महालेखाकार, अहमदाबाद को भी की गई थी । चूंकि मुझे पहले से पता था इसलिए यह काम मैंने श्री पिनाकिन पटेल को

आबंटित किया था । पिनाकीन पटेल ने इस कार्य के लिए चैन्नई से आये हुए लेखाकार के भाई बहन को शाहीबाग में स्थित डॉ. गोपाल भाटी का परामर्श करने के लिए कहा । डॉक्टर जो मानसिक रोगों की सार्वार के लिए माहिर है, उन्होंने होटल में स्थित लेखाकार की जाँच करने की ईच्छा प्रदर्शित की । इस सुझाव पर लेखाकार के भाई-बहन ने उनके साथ आने के लिए यह कह कर इन्कार कर दिया कि हम दोनों को देख के वह गाली-गलौच भी कर सकता है । कल्याण अनुभाग के लिए होटल में जाकर डॉक्टर की जाँच करवाना मुश्किल था क्योंकि लेखाकार के लिए हम अजनबी थे और ना तो होटलवाले हमको उनके रुम में जाने की ईजाजत देने वाले थे । होटलवालों की नजर में लेखाकार सामान्य आदमी की तरह था और व्यवहार में भी सौजन्यपूर्ण था । पिनाकीन पटेल कल्याण अनुभाग के लिए सर्फ एक्सल की तरह है । आयी हुई मुसीबत का हल ढूढने में पिनाकीन का कोई विकल्प नहीं है ।

हमने इस पेचीदा कार्य के लिए लेखाकार के भाई-बहन को एलिसब्रिज पुलिस थाने में जाकर मदद मांगने के लिये प्रोत्साहित किया लेकिन पुलिसवालों ने इस मामले में पड़ने से

इन्कार कर दिया। फिर प्र.म.ले.श्री ने कल्याण अनुभाग को पुलिस की मदद प्राप्त करने के लिए कहा, जो काम मैंने पिनाकीन को सौंपा। हमारी खुश किस्मती थी कि वहा थाने का इन्स्पेक्टर पिनाकीन का स्कूल का दोस्त था। इन्स्पेक्टर की सूचना के अनुसार डॉक्टर की टीम को होटल में जाने की अनुमति मिल गई। होटल में से लेखाकार को बेहोश करके ले जाना था। इसलिए पिनाकिन ने लेखाकार को यह कहकर इन्जेक्शन लगवाने के लिए राजी किया कि अहमदाबाद में स्वाईनफ्लू की बीमारी की रोकथाम करने हेतु टीका लगवाना जरूरी है। यह कार्य पूर्ण होने पर लेखाकार को बेहोश करके होटल से अस्पताल में भर्ती किया गया। प्रधान महालेखार द्वारा दिये गए इस कार्य के सुचारू रूप से संपन्न होने पर मेरे और कल्याण अनुभाग की टीम के सदस्यों पिनाकिन पटेल, सुनिल परमार, राजु चौहान व महेश परमार पर गर्व था। इसके अलावा इस कार्य में चैन्नई से आये हुए सदस्यों के साथ तमिल भाषा में बातचीत करने में श्री शिवा साहब की मदद के लिए भी शुक्रिया अदा करना चाहूंगा। शिवा साहब ने पूरे केस में कल्याण अनुभाग को सही मायने में मदद किया था। शिवा साहब ने लेखाकार का होटल के रुम की तलाश करने हेतु उनके एम.टी.एस. श्री नितिन परमार को लेखाकार के भाई-बहन जो होस्पिटल में स्थित

थे उनकी विनती पर भेजा गया। श्री नितिन को कमरे की तलाश के दौरान ढाई लाख नगद मिले, जो उन्होंने शिवा साहब के जरिए लेखाकार की बहन को वापस दिये। बदले में श्री परमार, एम.टी.एस. को लेखाकार की बहन ने ईमानदारी के तोहफे में घड़ी दी। मैंने स्कूल के दिनों में प्रबोद जोशी का एक नाटक किया था “पागल” इसमें विनोद नामक किरदार यह कहता है कि कसूर उसने नहीं किया रोटि की कसम, भूख की दुनिया में ईमान बदल जाते हैं। यही डायलॉग रोटि मूवी में अन्त में राजेश खन्ना द्वारा बोला जाता है। मुझे खुशी इस बात की है कि अपने कार्यालय के श्री नितिन परमार की ईमानदारी इतनी भारी मात्रा में नगद देखकर भी नहीं बदली। नितिन चाहता तो होटल कर्मचारियों के साथ में मिल के पैसा उड़न छू कर सकता था, लेकिन एक गरीब खानदानी लड़के की ईमानदारी के लिए मुझे हरदम गर्व रहेगा क्योंकि उसने ईमानदारी को अपना फर्ज माना... सलाम है नितिन को कि उसने इस भूख की दुनिया में अपना ईमान न बदला।

कहने की जरूरत नहीं है कि यह वाक्या से जब प्रधान महालेखाकार श्री ठाकरे साहब व श्री यादव साहब प्रधान निदेशक को अवगत कराया गया तो दोनो महानुभावों का सिर फक्र से ऊँचा था।

हिन्दी पखवाड़ा 2015

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद के सभागार में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.क्षे.ले.प.) गुजरात, अहमदाबाद; कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद; कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) गुजरात, शाखा: अहमदाबाद और कार्यालय महालेखाकार (सामान्य व सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, शाखा: अहमदाबाद के द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 14 सितम्बर 2015 से 30 सितम्बर 2015 तक किया गया। पखवाड़े का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. मीरा रामनिवास, आई.पी.एस., ए.डी.जी.पी. (कानून एवं व्यवस्था) गुजरात और प्रधान निदेशक श्री डी.पी. यादव ने किया। मुख्य अतिथि महोदय और प्रधान निदेशक महोदय ने कार्यालय की संयुक्त हिन्दी पत्रिका “आरोहण” के वर्ष 2014-15 के अंक का विमोचन भी किया।

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन बड़े जोश और उत्साह के साथ किया गया और चारों कार्यालयों के सदस्यों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि महोदय, प्रधान महालेखाकार महोदय और प्रधान निदेशक महोदय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय, सांत्वना-प्रथम और सांत्वना-द्वितीय पुरस्कार और प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। हिन्दी अनुभाग के द्वारा कार्यालय के सभी सदस्यों से अपना कार्यालीन कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करने की अपील की गई।

30 सितम्बर 2015 को आयोजित समापन समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती डॉ. रंजना अरगड़े जी थीं। कल्याण अधिकारी ने समापन समारोह की मुख्य अतिथि महोदय का आभार व्यक्त किया और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को तथा हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए हिन्दी अनुभाग में कार्यरत सदस्यों को बधाई दी।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

1-04-2015 से 31-03-2016 के दौरान नई भर्तियों / पदोन्नतियों / सेवानिवृत्तियों / ऐच्छिक सेवानिवृत्तियों का विवरण

01). 01 अप्रैल 2015 से 31 मार्च 2016 तक की नई भर्तियाँ :-

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	:	02
लेखा परीक्षक	:	22
डी.ई.ओ.	:	05
आशुलिपिक	:	03
कुल	:	32

02) पदोन्नतियाँ :-

ले.प.अ. कॉडर से व.ले.प.अ. कॉडर में	:	05
स.ले.प.अ. कॉडर से ले.प.अ. कॉडर में	:	07
लेखापरीक्षक/व. लेखापरीक्षक/डी.ई.ओ. से स.ले.प.अ. कॉडर में	:	16
व. लेखापरीक्षक से पर्यवेक्षक (सुपरवाइजर)	:	04
लिपिक/टंकक/एम.टी.एस. से लेखा परीक्षक कॉडर में	:	05
एम.टी.एस. से लिपिक/टंकक (सी-टी)	:	01
कुल	:	38

03) सेवानिवृत्तियाँ :-

श्री ए.जे. पनारवाला	30 अप्रैल 2015
श्री एन.आर. चौधरी	30 अप्रैल 2015
श्री एल.एल. वोरा	31 मई 2015
श्री पी.एच. पराठे	31 मई 2015
श्री एम.एन. यादव	30 जून 2015
श्री बी.ए. वाजडका	30 सितम्बर 2015
श्री सी.टी. जोस	30 नवम्बर 2015
श्री बी.वी. दतानिया	30 नवम्बर 2015
श्री के.जे. वैष्णव	31 मार्च 2016

04) ऐच्छिक सेवानिवृत्ति

श्री सी.आर. देसाई	10 मार्च 2016 पूर्वाह्न
-------------------	-------------------------

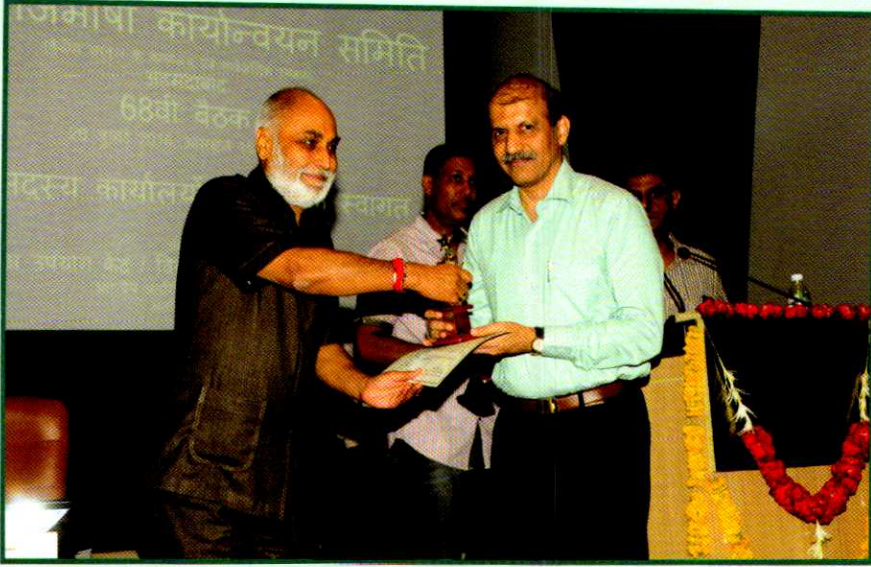
वर्ष 2015-16 में कार्यालय में आयोजित प्रवृत्तियों का ब्यौरा ।

1. पोस्ट ऑफिस के हेड पोस्टमॉस्टर द्वारा कार्यालय के कर्मचारियों को पोस्ट से मिलने वाले लाभों के बारे में संभाषण दिया गया था ।
2. दिनांक 10-5-16 को शेल्वी हॉस्पिटल के वरिष्ठ डॉक्टर श्री शालीन ठाकोर (HOD of Cardiac Sciences) हेल्थ अवेरनेस का प्रोग्राम रखा गया था ।
3. दिनांक 21-6-2016 को इंटरनेशनल योग दिवस मनाया गया था । जिसमें योग गुरु की अध्यक्षता में योग अभ्यास करवाया गया था । जिसमें Pr. AG Sir, PD Sir, समूह अधिकारियों के साथ अन्य कार्यालय सदस्यों ने भी भाग लिया ।
4. दिनांक 13-7-16 को वरिष्ठ डॉक्टर मिताली वसावडा स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा संभाषण दिया गया था ।
5. दिनांक 12-7-16 को न्यू पेन्सन स्कीम की जानकारी हेतु संभाषण रखा गया था ।

हिन्दी हमारा सम्मान है ।

- टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए ।
- मसौदें हिन्दी में तैयार कीजिए ।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
- अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए ।

❧ विशेष उपलब्धि ❧



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद ने वर्ष 2015-16 में प्रधान महालेखाकार महोदय के नेतृत्व व उच्च अधिकारियों के निर्देशन में तथा कार्यालय के प्रत्येक सदस्य के सहयोग से भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की जो कि हमारे कार्यालय व इसके प्रत्येक सदस्य के लिए बड़े ही गर्व और गौरव की बात है। इस सफलता पर नराकास, अहमदाबाद के अध्यक्ष श्री बलवीर सिंह, भा.रा.से., से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय (ऊपर) और हिन्दी अधिकारी (नीचे)।

आरीहण



ऑडिट भवन, अहमदाबाद

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद

तथा

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद

ऑडिट भवन, नजदीक ईश्वर भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद — 380009.